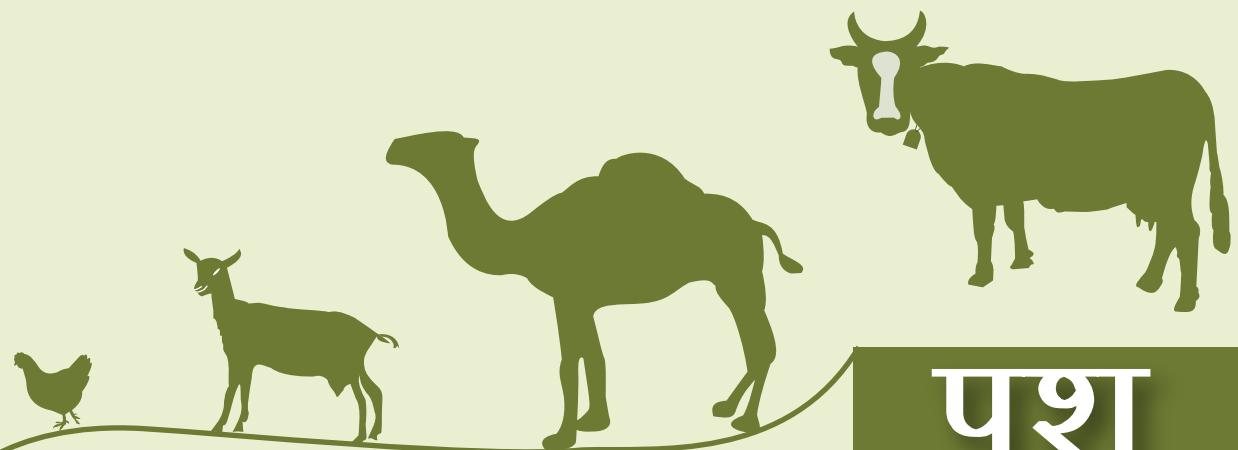
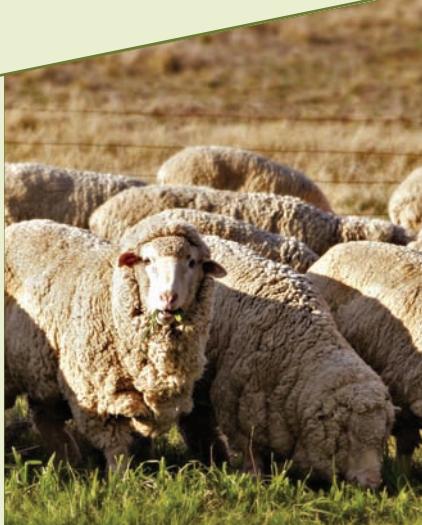


घरेलू पशुओं में टीकाकरण द्वारा संक्रामक रोगों से बचाव



KRISHI VASANT

Central Institute of Cotton Research, Nagpur

9–13 FEBRUARY, 2014

पशु
पालन

the patient's pain and the patient's response to treatment. The following section will describe the practical approach to the treatment of chronic pain.

The first step in the treatment of chronic pain is to determine if the pain is chronic or acute. Chronic pain is defined as pain that has been present for more than three months.

The second step is to determine the cause of the pain. This can be done by taking a history and performing a physical examination.

The third step is to determine the type of pain. This can be done by classifying the pain as either acute or chronic.

The fourth step is to determine the severity of the pain. This can be done by using a pain scale.

The fifth step is to determine the best treatment for the pain. This can be done by considering the patient's age, sex, and medical history.

The sixth step is to determine the best treatment for the pain. This can be done by considering the patient's age, sex, and medical history.

The seventh step is to determine the best treatment for the pain. This can be done by considering the patient's age, sex, and medical history.

The eighth step is to determine the best treatment for the pain. This can be done by considering the patient's age, sex, and medical history.

The ninth step is to determine the best treatment for the pain. This can be done by considering the patient's age, sex, and medical history.

The tenth step is to determine the best treatment for the pain. This can be done by considering the patient's age, sex, and medical history.

The eleventh step is to determine the best treatment for the pain. This can be done by considering the patient's age, sex, and medical history.

The twelfth step is to determine the best treatment for the pain. This can be done by considering the patient's age, sex, and medical history.

The thirteenth step is to determine the best treatment for the pain. This can be done by considering the patient's age, sex, and medical history.

The fourteenth step is to determine the best treatment for the pain. This can be done by considering the patient's age, sex, and medical history.

The fifteenth step is to determine the best treatment for the pain. This can be done by considering the patient's age, sex, and medical history.

The sixteenth step is to determine the best treatment for the pain. This can be done by considering the patient's age, sex, and medical history.

The seventeenth step is to determine the best treatment for the pain. This can be done by considering the patient's age, sex, and medical history.

The eighteenth step is to determine the best treatment for the pain. This can be done by considering the patient's age, sex, and medical history.

The nineteenth step is to determine the best treatment for the pain. This can be done by considering the patient's age, sex, and medical history.

The twentieth step is to determine the best treatment for the pain. This can be done by considering the patient's age, sex, and medical history.

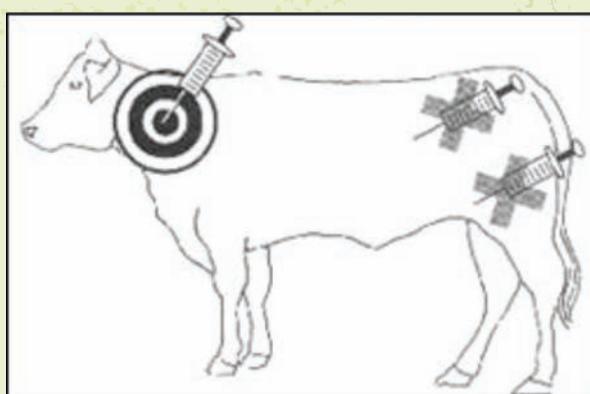
घरेलू पशुओं में टीकाकरण द्वारा संक्रामक रोगों से बचाव

- घरेलू पशुओं में संक्रामक रोगों की रोकथाम के लिए टीकाकरण सर्वोत्तम विधि मानी जाती है।
- वैक्सीन टीके पशुओं के शरीर में प्रभावी त्रिदोषन या कोशिका मध्यस्ता प्रतिरक्षा को विकसित कर पशुओं की विभिन्न रोगों से सुरक्षा प्रदान करने में मदद करती हैं।
- वैक्सीन पशुओं के शरीर पर कोई दुष्प्रभाव नहीं डालती है।
- टीकाकरण कार्यक्रम का कड़ाई से अनुपालन हमारे पशुओं को स्वस्थ एवं अधिक उत्पादनशील बनाएं रखने में हमारी मदद करता है।



पशुओं के टीकाकरण से पहले क्या करें ?

- पशुओं को कृमिनाशक औषधियों द्वारा कृमि मुक्त करें
- टीकाकरण के दो सप्ताह बाद तक पशुओं को तनाव मुक्त रखें एवं रोगी पशु के संपर्क से बचायें



पशुओं के टीकाकरण के दौरान क्या न करें

- रोगी दुर्बल एवं वृद्ध पशुओं का टीकाकरण न करें
- टीकाकरण के बाद दो सप्ताह तक पशुओं के उपचार हेतु एन्टीबॉयोटिक सल्फा औषधियों, कृमिनाशक और प्रतिरक्षा दमनक दवाओं का प्रयोग न करें।

पालतू पशुओं में संक्रामक रोगों से बचाव के लिए टीकाकरण सारणी:

बीमारी	वैक्सीन	खुराक	कैसे लगायी जाए	वैक्सीन लगाने का समय
गलघोट्टु गाय, भैस, भेड़, बकरी एवं सूकर	फिटकरी सांद्रित	पांच मिली.	खाल के नीचे	प्रथम बार छः महीने की उम्र में, तत्पश्चात् छः महीने के बाद



बीमारी	वैक्सीन	खुराक	कैसे लगायी जाए	वैक्सीन लगाने का समय
खुरपका—मुँहपका रोग गाय, भैस, भेड़, बकरी, सूकर, याक एवं मिथून	एल्युमिनियम हाइड्राक्साइड जैल अवशोषित खुरपका मुँहपका वैक्सीन	दो मिली.	खाल के नीचे	प्रथम बार तीन महीने की उम्र में तत्पश्चात् नौ महीने की उम्र में बूस्टर खुराक, उसके बाद हर ४ महीने पर
	तेल गुणवर्धक खुरपका मुँहपका वैक्सीन	दो मिली	गहरे माँस के अन्दर	बूस्टर नौ महीने के बाद



ब्रूसीलोसिस गाय,
भैस, भेड़, बकरी,
सूकर एवं कुत्ता
प्रजाति

ब्रूसेला
अर्बोटिस

दो मिली

खाल
के नीचे

चार से ४ महीने के की मादा पशुओं में



लंगड़ा बुखार
गाय, एवं भैस

लंगड़िया बुखार
जीवाणु टीका

पाँच
मिली

खाल
के नीचे

बर्शा ऋतु के प्रारम्भ होने से पूर्व वर्ष में
एक बार



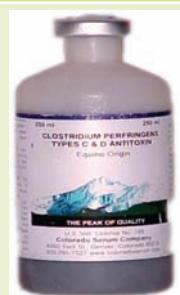
बीमारी	वैक्सीन	खुराक	कैसे लगायी जाए	वैक्सीन लगाने का समय
गिल्टीरोग गाय, भैस, भेड़, बकरी एवं सूकर	एंथ्रेक्स बीजाणु टीका	एक मिली.	खाल के नीचे	वर्षा ऋतु के प्रारम्भ होने से पूर्व वर्ष में एक बार



भेड़ चेचक (भेड़)	भेड़ चेचक तनु टीका	एक मिली.	खाल के नीचे	तीन महीने की उम्र होने पर
------------------	-----------------------	----------	-------------	---------------------------



ऐन्टोरोटाक्सीमिया भेड़ एवं बकरी	ऐन्टोरोटाक्सी मिया वैक्सीन	2.5 मिली	खाल के नीचे	तीन महीने की उम्र होने पर तथा चौदह दिनों बाद बूस्टर टीका, तत्पश्चात गर्मी ऋतु शुरू होने से पूर्व बार्षिक टीकाकरण
------------------------------------	-------------------------------	----------	-------------	--



पी. पी. आर. बकरी एवं भेड़	पीपीआर तनु टीका	एक मिली	खाल के नीचे	
------------------------------	--------------------	---------	-------------	--



बीमारी	टीका	खुराक	कैसे लगाये	टीकाकरण की उम्र
धनुस्तंभ (सभी पालतू पशु प्रजातियों में)	टिटनेस टॉक्साइड	एक मिली.	मांस के अन्दर	पहली खुराक के चार छ: सप्ताह बाद बूस्टर टीका तत्पश्चात् वार्षिक टीकाकरण



घोड़ा प्रजाति में गर्भपात	साल्मोनेला अबोर्टस इक्वाइ टीका	10–15 मिली.	गहरे मांस के अन्दर	दो-चार सप्ताह के अन्तराल में दो बार टीकाकरण तत्पश्चात् वार्षिक टीकाकरण
---------------------------	--------------------------------	-------------	--------------------	--



घोड़ा प्रजाति में गर्भपात शूकर ज्वर शूकर प्रजाति	लैपिनाइज्ड शूकर ज्वर टीका	एक मिली.	खाल के नीचे	तीन महीने से अधिक उम्र के सभी शूकरों का वार्षिक टीकाकरण
--	---------------------------	----------	-------------	---



मुर्गियों के लिए टीकाकरण सारणी:—

ब्रायलर मुर्गी के लिए

बीमारी	टीका	आयु	कैसे दे
रानीखेत	एफ / बी-1	4 से 6 दिन पर	आँख-नाक में 1-1 बूंद या पीने के पानी में



गंबोरो	स्टैडर्ड / जीओरजिया इंटरमिडीयट पल्स या एम बी	12-14 दिन	आँख-नाक में 1-1 बूंद या पीने के पानी में
--------	--	-----------	--



अण्डे देने वाली मुर्गियों एवं ब्रीडर मुर्गियों के लिए टीकाकरण सारणी:—

मैरेक्स बीमारी (एम डी)	एच. वी.टी.	1 दिन	0.1 मि.ली. चमड़ी के नीचे
------------------------	------------	-------	--------------------------



बीमारी	टीका	आयु	कैसे दे
रानीखेत	एफ / बी-1 आर 2 बी या आर डी कील्ड वैक्सीन	1 दिन 4-6 दिन 60 दिन	0.1 मि.ली. चमड़ी के नीचे आँख-नाक में 1-1 बूंद या पीने के पानी में 0.25-0.5 मि.ली. चमड़ी के नीचे



गंबोरो	स्टैंडर्ड / जी ओरजीया या इण्टरमिडियट प्लस	15-16 दिन	आँख-नाक में 1-1 बूंद या पीने के पानी में
--------	---	-----------	---



आई बी	आई बी	21 दिन	2-2 बूंद पीने के पानी में
-------	-------	--------	---------------------------



बीमारी	टीका	आयु	कैसे दे
फाउल पोक्स या माता रोग	माता का टीका	42 दिन	0.1 मि.ली पंख के नीचे या मांस में
			

टीकाकरण के फायदे

- टीकाकरण संक्रामक रोगों से हमारे जानवरों की रक्षा करता है।
- टीकाकरण के द्वारा जूनोटिक बीमारियों का पशुओं से मनुष्यों में संक्रमण को रोका जा सकता है।
- टीकाकरण संक्रामक रोगों से जुड़े उपचार की लागत को कमकर किसानों पर आर्थिक बोझ को कम करने में मदद करता है।

टीकाकरण के दौरान सावधानियाँ

- वृद्ध, एवं उन्नत गर्भवती जानवरों के टीकाकरण नहीं किया जाना चाहिए।
- कम गुणवत्ता टीका या टीकें की कमी प्रतिजनी खुराक से परहेज करना चाहिये।
- वायरल तनु टीकें को बनाए रखने के लिए उचित कोल्ड चेन को बनाये रखना चाहिए।
- पशुओं के टीकाकरण से पहले पशुओं को कृमिनाशक दवाओं द्वारा उन्हे कृमि मुक्त बनाया जाना चाहिए।
- संक्रमित या रोग ग्रस्त पशुओं के टीकाकरण से परहेज करना चाहिए।
- टीकाकरण सारणी की सख्त अनुपालन टीकाकरण कार्यक्रम की सफलता के लिए अत्यंत आवश्यक है।





लेखक

चन्दन प्रकाश, अभिशेक, विशाल चन्द्र,
बबलू कुमार, पवन कुमार, विक्रमादित्य उपमन्यु,
सलाउदीन कुरैशी एवं ऋषेन्द्र वर्मा

संगठन

संयुक्त निदेशालय, प्रसार शिक्षा

भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान

इज्जतनगर – 243 122, उ.प्र.



कृषि एवं सहकारिता विभाग
कृषि मंत्रालय
भारत सरकार